नोबुल पुरस्कार विजेता बोरिस पेस्टर्नक की महान-कृति

डॉक्टर ज़िवागो

(रूसी क्रांति के भाग्य का मार्मिक उपन्यास)

अनुवादक श्रीसत्य

सहायक श्री सोहनलाल मेहता, श्री बुद्धिवल्लभ चतुर्वेदी

सोहम-प्रकाशन

पो० बा० १७७९.

रघुनाथ दादाजी स्ट्रीट, फोर्ट,

बम्बई १

प्रकाशक

श्रीमल,
सोऽहम् प्रकाशन,
पो० बा० १७७९
र० दा० स्ट्रीट, बम्बई १

मुखपृष्ठ

श्री प्रसन सेठ

प्रथम संस्करण १९५९

मूल्य

दस रुपये

त्वदीय वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पयेत् —

मानवीय संवेदनाओं के सजग-स्पष्ट-द्रष्टा और महान लेखक

बोरिस पेस्टर्नक

को

उनकी पुस्तक का यह अनुवाद

उन्हें ही

सादर समर्पित

सत्य को प्रणाम

स्पष्टीकरण :—

इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन की प्रेरणा मूल लेखक की प्रतिभापूर्ण प्रभावशाली लेखन शैली और उसके अन्तर्निहित वक्तव्य की मार्मिकता ही है।

*　　　*　　　*

हर दृष्टि से इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन का कार्य बहुत ही जटिल महसूस हुआ है। प्रत्येक सभव प्रयत्नों द्वारा इसकी मर्यादा को अक्षुण्ण रखने का श्रम साध्य प्रयत्न किया गया है।

*　　　*　　　*

इस अनुवाद में उपन्यास की सरस शैली का अन्त तक निभाव करने का प्रयत्न स्पष्ट है।

*　　　*　　　*

लेखक का मुखरित वक्तव्य अपने मौलिक रूप में ही प्रभावशाली रहे, इसके प्रति विशेष ध्यान रखा गया है।

*　　　*　　　*

इसीलिए पहले इसका शब्द-ब-शब्द अनुवाद किया गया, बाद में उसका मिलान हुआ। फिर सारा उपन्यास दुबारा लिखा गया, सम्पादित हुआ, तब अन्तिम संशोधन-परिवर्द्धन-परिवर्तन के बाद इसे प्रस्तुत किया गया है। प्रसन्नता इसी बात की है कि इतना परिश्रम करने के बाद इसे सन्तोषजनक तरीके से सम्पूर्ण किया जा सका। इस कार्य-काल में लगा कि हिन्दी के सरल सरस शब्दों द्वारा किसी भी महान कृति का अनुवाद सभव है।

*　　　*　　　*

इससे श्रेष्ठ अनुवाद हो नहीं सकता, वक्तव्य का यह संकेत नहीं है। हो सकता है लेकिन इसके लिए इससे चौगुनी मेहनत अपेक्षित है। ऐसा हो मैं यह चाहता हूँ।

*　　　*　　　*

इस योजना को क्रियान्वित करने में श्री सोहनलाल मेहता ने सक्रिय रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। बिना श्रम-बोध के उन्होंने जितना कष्ट इसके लिए उठाया है, यह उनकी एक निष्ठ-सरलता और चतुर्दिक प्रतिभा का सूचक है।

श्री बुद्धिवल्लभ चतुर्वेदी होनहार तरुण व्यक्ति हैं। श्रम-कुशल। आशा है, उनका रात दिन का सतत परिश्रम उनके शुभ्र भविष्य का सूचक सिद्ध होगा।

*   *   *

अनेक सहयोगियों के व्यय-श्रम को भी धन्यवाद मिलना चाहिए। अधूरे काम को छोड़ कर भाग जाने वाले, इन सज्जनों को धन्यवाद देन अथवा उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करने में एक ही डर है कि कहीं वे बुरा न मान जायें। वैसे पुस्तक-प्रकाशन के काम में उनके 'श्रम से मुक्ति' लाभदायक ही सिद्ध हुई है।

*   *   *

मेरे प्रेस व्यवस्थापक श्री कृष्णअप्पा को इसके मुद्रण की श्रेष्ठता का श्रेय है। वैसे अन्य तमाम प्रेस और प्रकाशन के साथियों के निरन्तर जागरण की खुमारी पुस्तक के अन्तिम चरण तक सामने है ही।

*   *   *

एक बात जो सबसे अधिक हृदय-स्पर्शी लगी है—वह है रूसी जन-जीवन की भावनाओं से भारतीयता का निकटतम सम्पर्क। बोरिस पेस्टरनक की प्रतीकात्मक छायावादी भावनाओं को सम्भवतः हिन्दी में अभिव्यक्त करना किसी अन्य भाषा के बनिस्पत अधिक सार्थक सिद्ध हुआ है।

*   *   *

महायुद्ध और गृहयुद्ध से संत्रस्त मानवता के प्रति इस पुस्तक में आदि से अन्त तक जो वक्तव्य है, वह सामयिक, महत्वपूर्ण और मार्मिक है।

*   *   *

शुद्ध रूप से यह साहित्यिक प्रयास है और इसे इसी रूप में मान्यता मिले, इस आशा के साथ।

—श्रीसत्य

क्रम :

पात्र-परिचय :

यूरी — यूरी, यूरा, जिवागो। डाक्टर, लेखक, कवि। कथा नायक।

निकोलाय — यूरी की विचारधारा को सबसे अधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा देने वाले उसके मामा।

एलेक्जेण्डर — टोन्या के पिता। यूरी इन्हीं के यहा बड़ा हुआ था। बाद में यूरी के ससुर।

अन्ना — उदारहृदया, एलेक्जेण्डर की पत्नी, जिसकी मृत्यु ने यूरी क जीवन में अपूरणीय अभाव उत्पन्न कर दिया था।

टोन्या — यूरी की बचपन की साथी। पत्नी। यूरी के प्रति अनुरक्त, बाद में भाग्य की विडम्बना के कारण प्रताडित।

लारा — कोमारोवस्की द्वारा छली हुइ सतप्त अनाथ लड़की। पाश की प्रेमासक्त पत्नी। यूरी की उन्मुक्त, मगर गभीर प्रेमिका उसके जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं की साक्षी विभिन्न परिस्थितियों में यूरी के जीवन में विशिष्ट भूमिक अदा करनेवाली। उसके काव्य और मनोभूमि के उन्न धरातल की प्रेरणा। युग की जीती जागती तस्वीर।

कोमारोवस्की — लारा के जीवन म अपन अन्धानुराग द्वारा विष-बी बोनेवाला अधेड़ वकील। कथा के दुखान्त भाग क सूत्रधार।

पाशा आन्तिपोव — लारा का पति। प्रतिभाशाली, ओजस्वी, कर्मठ, शानदा स्वच्छ-पुरुष। बाद में स्ट्रेल्निकोव के रूप में प्रस्तुत।

गेल्युलिन — पाशा का मित्र होते हुए भी श्वेत दल के लेफ्टिनेन्ट के रू में घातक शत्रु।

पोल्या — पेलेगेया, त्यागुनोवा। क्रांति और गृह-युद्ध म भटकती हु भाग्य प्रताडित लड़की।

सामदेवयातोव	यूरी के सहायक। बाद में लारा के शुभेच्छु। मस्त स्वभाव के, अत्यन्त प्रभावशाली, बातूनी व्यक्ति।
मिकुलित्सिन	भूतपूर्व जिवागो भवन के व्यवस्थापक और वन्य भ्रातृत्व के नेता, लिबेरियम के पिता।
लिबेरियस	गृह युद्ध के समय सपक्षीय सेना का संचालक।
ग्लाफिरा	ग्लाशा। हरफन मौला। हर तरह के काम में मुस्तैद।
सीमा	निकोलाय निकोलायविच के दार्शनिक विचारों से प्रभावित ग्लाफिरा की बहन। लारा की सहेली।
तान्या	लारा और यूरी की अनाथ लड़की।
मरीना	यूरी का तीसरा प्रेम काण्ड। मृत्यु साक्षी के समय लारा के अलावा अपना प्रेम व्यक्त करने अपने बच्चों के साथ यही शेष रही।
वास्या	सपक्षीय सेना से जान-बूझ कर भागा हुआ एक लड़का। पोल्या के प्रति आसक्त। अंतिम चरण में यूरी का सहायक और बाद में उसके साहित्य का प्रकाशक।
युवग्राफ	जिवागो का सौतेला भाई। मेजर जनरल। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से यूरी की सहायता करनेवाला।
डुडरोव, निकी	यूरी के दो मित्र।



'सारवत स्मृति' का गीत गाते हुए वे आगे-आगे चले जा रहे थे। जब उनके गीतों का स्वर रुक जाता तब उनकी पग्ध्वनि, घोड़ों की टाप और हवा की साय साय उनके गीतों की लय को प्रवाहित करने लगती।

शव-यात्रियों को मार्ग देते हुए रास्ते के लोग एक ओर हट जाते। शव पर लटक रहे हारों को गिनते हुए उनके हाथ कंधे मस्तक और छाती को छू लेते। इस प्रकार मृतक आत्मा के प्रति वे अपनी धार्मिक श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे।

कौतूहलवश कुछ लोग शव-यात्रियों के साथ चलने लगे। रास्ते चलते लोगों में से कुछ ने पूछा –किसे दफनाया जा रहा है?

उन्हें प्रत्युत्तर मिला –जिवागो को।

—अच्छा यह बात है। तभी।

—जिवागो नहीं, यह उसकी पत्नी है।

ख़ैर, मतलब एक ही है। भगवान उसकी आत्मा को शांति प्रदान करें। जनाजा बड़ा शानदार निकला है।

प्रत्येक क्षण सदा के लिए बीतता जा रहा था।

पादरी ने मन्त्र पढ़ा – भूमि ईश्वर की है और उसकी व्याप्ति सभी में है। पृथिवी और उसमें रहनेवालों में वह विद्यमान है।

उसने मार्या निकोलायवना की लाश पर क्रास के आकार में मिट्टी फैला दी। न्याय की अन्तरात्मा –'सोल आफ द जस्ट'– का गीत आरंभ हुआ।

इसके बाद भयाक्रांत कार्यवाही शुरू हुई। कफन ढंक दिया गया। कील ठोंक दी गयीं और खुदी हुई कब्र में लाश को रख दिया गया। चार फावड़ों ने जल्दी जल्दी मिट्टी डाली। बरसात की बूँदों का सी आवाज सुनाई देने लगी। कब्र पर मिट्टी का एक टीला बन गया।

एक दस वर्षीय बालक उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

जब किसी बड़े आदमी की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पादित होती है, तो लोगों में भावरहित चेतनाशून्य स्थिति आ जाती है। इसी कारण कुछ लोगों को लगा यह बालक भी अपनी माँ की कब्र पर खड़ा होकर शोक-सन्देश देना चाहता है।

बालक ने अपना सर ऊपर उठाया। सामने फैली हुई पतझड़ के कारण वीरान विस्तीर्ण भूमि और ऊँचे उठे हुए आश्रम के गुम्बदों की ओर वह भाव शून्य नेत्रों से देखता रहा। शोक के कारण छोटी नाक वाले इस लड़के का चेहरा विकृत हो गया था। उसने गर्दन सीधी की, ऊपर उठाई। यदि भेड़िये का बच्चा इसी तरह गर्दन ऊपर उठाकर देखता तो उसका यही अर्थ लगाया जाता कि वह अब जोर से चिल्लानेवाला है। अपने दोनों हाथों से मुँह ढक कर वह फूट फूट कर रोने लगा। वायु की शीतल ओसमयी लहरियों ने उसके चेहरे और हाथों को तरल कर दिया।

इसी समय तंग आस्तीन के काले कपड़े पहने एक व्यक्ति उसके पास चला आया। यह था निकोलाय निकोलायविच् वेदेन्यापिन। मृत स्त्री का भाई और इस लड़के का मामा। वह पादरी था मगर उसकी अपनी प्रार्थना के कारण उसे इस धार्मिक अनुष्ठान के पद से मुक्त कर दिया गया था।

वह बालक के पास गया और उसे लेकर श्मशानभूमि से बाहर चला आया।

२

उन्होंने वह रात वहीं आश्रम में बिताई। अपने पुराने सम्बन्धों के कारण कोल्या को यहाँ जगह मिल गई थी।

कुमारी मरियम की अमरता प्राप्ति के त्यौहार का वह पहला दिन था।

उनका विचार था कि दूसरे दिन दक्षिण में वोल्गा के किनारे के एक शहर की ओर वे चले जायेंगे जहाँ कोल्या मामा एक प्रगतिवादी समाचार पत्र के प्रकाशक के यहाँ काम करते थे। टिकट वगैरह खरीदे जा चुके थे। सामान असबाब भी बंधा हुआ तैयार था। दूर कहीं पड़ाव में डिब्बे जोड़नेवाले इंजन की फुफकार हवा में तैरती हुई सी सुनाई दे रही थी।

शाम हुई। ठंड पड़ने लगी। कमरे की दोनों खिड़कियाँ जमीन की सतह पर थीं। आश्रम के अन्तर्भाग की उपेक्षित वीरान बगिया का कोना यहाँ से दिखाई देता था। इसी कोने से घूम कर मुख्य सड़क आगे निकल जाती थी। सड़क पर यहाँ-वहाँ बर्फ फैली हुई थी।

इसी खिड़की से गिरजाघर का वह कोना भी दिखाई पड़ता था, जहां एक दिन पहले मार्या निकोलायेवना की अन्त्येष्टि की गयी थी।

अन्तर्भाग के उस भाग मठियोंवाले बगीचे म दीवार क पास असाधिक का झाड़िया और वर्फ से ठिठुर कर कुम्हलाइ हुइ गोभी का दो चार क्यारिया के अतिरिक्त कुछ भी न था।

किसी प्रेत क वशीभूत होकर बिना पत्तोवाली आकाशी झाड़ियां नाचती नाचती धरती पर पसर जाती थीं।

म यरात्रि का नीरवता में खिड़की पर होनेवाली खड़खड़ाहट से बालक यूरा जाग गया। अन्धकारमय कमरा एक अजीब से प्रकार से भर सा गया। यूरा के शरीर पर सिवाय एक कमीज के कुछ भी न था, फिर भी वह उठाकर खिड़की क ठडे शीशे पर नाक लगाकर बाहर झाकने का कोशिश करने लगा।

बाहर न मठ दिखाई दे रही थी, न श्मशानभूमि, न आश्रम के अन्तर्भाग वाली बगिया। दिखाई देते थे चारों ओर सिर्फ वर्फीले तूफान के धुध भरी तेज हवाओं क झोंके।

मानो तूफान ने यूरा को देख लिया। उसे डराने का अपनी क्षमता पर विश्वास करके वह और जोर से सांय-सांय करने लगा। यूरा क ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने का वह हरचद कोशिश कर रहा था।

सफेद वर्फ की तरगे जोर से आकाश का ओर उठतीं, छा जातीं, फिर उतनी ही तीव्र गति से नीचे गिरती हुइ दिखाई देतीं और धरती को सफेद ढक कर देती। पृथिवी पर तूफान का एक छत्र साम्राज्य था। उसका मुकाबला करने वाला कहीं कोइ न था।

खिड़की से नीचे उतरते ही यूरा की पहली इच्छा यह हुइ कि वह कपड़े पहन कर बाहर भाग जाय और कुछ न कुछ करना शुरू कर दे। उसे डर था कि गोभियों क पौधों पर बर्फ इस तरह छा जायगा कि कोई उन्हें निकाल नहीं पायेगा। इसी तरह खुले मदान म दफन का हुइ उसका मा वेरहमी से जमीन म और गहरी धँस जायगी—और उससे दूर होती जायगी।

एक बार फिर उसका आंख भर आई उसका मामा उठ बैठा। इसा का कहानियां सुना कर वह उसे सान्त्वना देने की कोशिश करने लगा। अगड़ाई लेकर अयमनस्क सा मामा खिड़का क पास जाकर खड़ा हो गया।

दोनों कपड़े पहनने लगे। सुबह हो रही थी।

३

जब तक उसकी माँ जीवित थी, यूरा को मालूम नहीं था कि उसके पिता ने बहुत अर्से पहले ही उन्हें छोड़ दिया है। वह साइबेरिया में वेश्यागमन और शराब के नशे में धुत्त पड़ा रहता। यूरा को यह भी मालूम न था कि लाखों रुपया की जायदाद उसके पिता ने इन्हीं सब कामों में उड़ा दी थी। उसे हमेशा यही कहा जाता था कि उसका पिता व्यवसाय के सिलसिले में पीटर्सबर्ग या किसी बड़े मेले में (विशेष कर इर्बिट के) गया है।

उसकी माँ शुरू से ही कमजोर थी। बाद में उसे क्षय हो गया। दक्षिणी फ्रांस अथवा उत्तरी इटली में वह इलाज करवाने के लिए अक्सर जाया करती थी। उसकी इन यात्राओं में यूरा दो बार उसके साथ था। अक्सर उसे अपरिचित लोगों के पास छोड़ दिया जाता था। एक अजनबी से दूसरे अजनबी के पास रहने का वह आदी हो गया था। फिर रहस्य से आच्छादित इस तरह की असामान्य पृष्ठभूमि के कारण और हर रोज के परिवर्तनों से वह इतना अभ्यस्त हो गया था कि उसे अपने पिता की अनुपस्थिति से कोई आश्चर्य नहीं होता था।

उसे अपने बचपन के वे दिन याद आ जाते जब कई विभिन्न उपकरण उसके जाति नाम से पुकारे जाते थे। जिवागो फैक्टरियाँ थीं, जिवागो बैंक थे, जिवागो भवन थे, जिवागो टाइ पिन थी—यहाँ तक कि एक विशेष प्रकार की केक का नाम भी जिवागो-केक विख्यात हो गया था। एक समय ऐसा भी था कि मास्को के किसी भी स्ले-गाड़ीवाले को सिर्फ इतना ही कहते—'जिवागो के यहाँ' तो वह अपनी स्ले में बिठा कर इस दुनिया से परे की किसी और ही जादूभरी नगरी में आपको पहुँचा देता। ठीक उसी तरह जिस तरह आप उसे कहते—टिम्बक्टू चलो। उस क्षेत्र में आते ही बड़े-बड़े बाग बागों की शांति का सुखद आभास देते। फर-वृक्षों की बड़ी-बड़ी डालियों पर कौवे जब बैठते तो इनकी सी बर्फ जमीन पर गिरने लगती। उनकी काँव-काँव ईंधन की लकड़ियों के तोड़ने की आवाज की तरह सुनाई देती। दूर अंधकार में जब रोशनी चमकने लगती, तब अपने घरों से कुत्ते खुले मैदान में आ जाते।

एकाएक सब कुछ विलीन हो गया। वे गरीब हो गये।

४

माँ की मृत्यु के दो साल बाद सन् १९०३ ग्रीष्म की गर्मियों में एक दिन

यूरा अपने मामा कोल्या क साथ दो घोडोंवाला खुली गाडा म ग्वान ग्वानो विच वोस्कोरोयनिकोव नामक अध्यापक से मिलन क लिए कोलोग्रावोव की जागीर म डुप्ल्याकी की ओर जा रहा था। ग्वान ग्वानोविच वोस्कोरोय निकोव प्रचलित स्कूली किताबों का लेखक था। कोलोग्रावोव रेशम बनान क कारखान का मालिक था, और वह कला का कद्रदा भी माना जाता था।

उस दिन ' कज़ान की कुवारी ' का त्यौहार था। फसल लहलहा रही थी। शायद दो पहर होने क कारण, अथवा त्योहार क कारण रास्त म निप फुल सन्नाटा था। अधकटी फसल क खेत आधे बाल-कटे बच्चियों की तरह धूप में तिलमिला रहे थे। सर पर चिडिया चक्कर काट रहीं थी। पक हुए धान की बाल तन कर सीधी खडी थी।

रास्ते के उस पार भी फसल क ऊपरी कटे हुए हिस्से सिर तान खडे थे। दूर से ध्यानपूर्वक देखने पर लगता कि मानो वे मथर गति से हिल रहे हों जैसे ऊपर फले हुए आकाश की ओर देखते हुए सावधान भूमि-निरीक्षकों की तरह नोट्स तैयार करने में व्यस्त हों।

पावेल से निकोलाय निकोलायविच न पूछा – ये खेत जमींदारों क ह या किसानों के?

पावेल प्रकाशक महोदय का पीर ववर्ची मिस्त्री-खर सभी कुछ था। वह चालक के स्थान पर बैठा हुआ था। चुरुट निकाल कर और टागे तिरछा करके अपनी लापरवाही स वह यह सिद्ध करना चाहता था कि दरअसल गाडा चलाना उसका काम नहीं है। उसन विरक्त भाव स जवाब दिया —ये जमींदारों के हैं। उसने अपना पाइप निकाला, जलाया और एक-दो कश लेकर उनका दूसरी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उसने कहा —ये हमार हैं।

—चलोजी, तेज़ी से चलो, उसन घोडों से कहा। घोडा की पूछ और पीठ पर उसकी निगाह ठीक वैसी ही थी जिस प्रकार इजिन ड्राइवर की इजन के अनेक कल-पुर्जों पर होती है। लेकिन घोडे तो आखिर घोडे ही ठहरे। एक घोडा कभी अपनी चाल तेज करके दौडने लगता तो दूसरा हस की तरह शान से सिर हिला कर कुछ ऐसा जाहिर करता मानो उसका काम तो मात्र शोभा बढाना ही है और जैसे टापा और गले म बजनेवाली घण्टी का सुर मिलाना ही उसका विशेष उत्तरदायित्व है।

निकोलाय निकोलायविच अपने साथ वोरकोतोयनिकोव के भूमिसम्बन्धी मसलों पर लिखी गयी पुस्तक के प्रूफ लाया था। बढ़े हुए सेंसरशिप के कठिन कायदों का ख्याल रखते हुए पुस्तक को एक बार फिर से देखने के लिए प्रकाशक ने आग्रह किया था।

उसने पावेल से कहा —यहां लोग काफी उपद्रवी हो रहे हैं? सुना है एक व्यापारी का गला काट डाला गया और गांव के मामलों से सम्बन्धित एक सरकारी अफसर का सारा स्टेज जला डाला गया? इन सबके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? तुम्हारे गांव वाले इस बारे में क्या कहते हैं?

पावेल का दृष्टिकोण प्रत्यक्ष रूप में ससुर से भी अधिक अस्पष्ट था। वह चाहता था कि वोरकोतोयनिकोव अपने कृषि-सम्बन्धी अडिग विचारों को मर्यादित करे।

—आप उनसे किस बात की अपेक्षा रखते हैं? अब किसान काबू से बाहर हैं। उनके साथ जरूरत से ज्यादा अच्छा व्यवहार हुआ है। इतना अच्छा व्यवहार हम लोगों को निगलने के लिए पर्याप्त है। हर किसान के हाथ में थमा दीजिए एक रस्सा और फिर देखिये हम एक दूसरे के गले में किस तरह फांसी लगा देते हैं। —चल रे—चल—चली चल।

मामा के साथ दुन्याशा जाने का यूरा का यह दूसरा मौका था। उसका ख्याल था कि वह रास्ता जानता है। आगे और पीछे फैली हुई जंगल की धूमिल रेखाओं को देखकर हर बार वह सोचता कि रास्ता दाहिनी ओर मुड़ जायगा और कोलोग्रिवोव जागीर दिखाई पड़ने लगेगी। यहां दस मील तक फैला हुआ खुला मैदान होगा, नदी बह रही होगी और उसके पार रेलवे लाइन होगी। मगर हर बार उसका अंदाज गलत सिद्ध होता। मैदान आते और जंगलों की विशाल कोरों में समा जाते। एक के बाद एक आने वाले इन दृश्यों को देखकर यात्रियों के मन में विशालता की भावना का उदय होने लगता और वे भविष्य के बारे में सोचते हुए ख्यालों में डूब से जाते।

जिन पुस्तकों ने निकोलाय निकोलायविच को बाद में इतना प्रसिद्ध कर दिया था, वे अभी तक लिखी नहीं गयी थीं। हालांकि उसके विचार परिपक्व हो चुके थे। फिर भी उसे मालूम नहीं था कि वह सफलता के इतना करीब आ चुका है।

शीघ्र ही अपने ज़माने के लेखकों में वह अपना निश्चित स्थान प्राप्त करनेवाला था। क्रान्तिकारी आन्दोलन के समय के दार्शनिकों और विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसरों के समकक्ष होने पर भी उनके साथ, उनके रहन सहन और विचारादि के साथ उसका कोई मेल न था, सिवाय पारिभाषिक शब्दों की एकता के। बिना किसी अपवाद के वे सभी किसी न किसी बात अथवा तत्त्वविशेष की चर्चा में शब्दों के हेर फेर अथवा उसकी बाहरी रूप रेखा की बात करके सन्तोष कर लेते थे। लेकिन निकोलाय पादरी होने के साथ क्रान्तिकारी तथा आदर्शवादी टाल्स्टाय का अनुयायी दोनों ही था, और अपने मत पर दृढ़ था। वह किसी एक विचारधारा के पीछे पड़ता, प्रेरित होता और उस पर मजबूत रहता, ताकि उसे स्पष्ट मार्ग दिखाई दे और संसार अधिक श्रेष्ठ सुन्दर बने। उसके मतानुसार ये सिद्धान्त इतने सरल और सर्वव्यापी होने चाहिए कि वे किसी बच्चे की भी समझ में आ सकें अथवा किसी जड़ भरत को भी बिजली के प्रकाश की तरह स्पष्ट दिखाई दे सकें। ऐसी किसी नूतन विचारधारा उसके मन में दृढ़ता-पूर्वक जड़ जमा रही थी।

यूरा को अपने मामा के साथ रहना बहुत पसन्द था। उससे यूरा को अपनी माँ की याद आ जाती। माँ की तरह ही मामा का मस्तिष्क स्वतन्त्रता प्रेमी था। किसी भी प्रकार का अपरिचित वातावरण उसके लिए अनुकूल सिद्ध होता था। सभी प्राणियों में समानभाव से देखने की सौन्दर्य पूर्ण-दृष्टि और सरल स्वभाव ठीक माँ की ही तरह उसका भी था। माँ की तरह ही मामा किसी वस्तु का तत्त्व एक ही नज़र में समझ सकता था और किसी भी विचार को, उसके समाप्त होने से पहले ठीक तरीके से अभिव्यक्त कर सकता था।

मामा के साथ दुल्याका जाते समय यूरा को बड़ी खुशी हो रही थी। बहुत ही खूबसूरत जगह थी। इसमें भी उसे अपनी माँ की याद ताज़ा हो जाती थी। माँ को भी प्राकृतिक दृश्यों के प्रति बड़ा प्यार था और वह यूरा को हमेशा अपने साथ गाँवों की ओर ले आया करती थी।

निका डुडारोव से मिलने के लिए भी यूरा आतुर था। निका उससे दो वर्ष बड़ा था। वह शायद यूरा को तिरस्कार की दृष्टि से ही देखता था। वास्को वोयनिकोव के यहाँ रहने वाला वह एक स्कूल का विद्यार्थी था। उसने जब यूरा

के साथ हाथ मिलाया तो उसके माथ के वाल ल्लाट पर ल्टक आय और उसका आधा चहरा उसम छिप गया। पूरा नाक्न क साथ उसने यूरा का हाथ, हाथ मिलाते समय झटक दिया।

५

सशोधित पाण्डुलिपि पन्ते हुए निकोलाय निकोलायविच न कहा -गरीबी का समस्या का जड़।

--मूल जड़ कहिये मन्हाशय। मरे ख्याल म यह अधिक ठीक होगा। -इवान इवानोविच न प्रूफ सशोधित करते हुए कहा।

आधे अधकार स ढके हुए बरामदे के एक हिस्से म वे काम कर रहे थे। कुदाल फावड़ा आदि बगीचे का सामान पास ही पड़ा था। एक ओर टूटी हुई कुर्सी पर एक बरसाती कोट ल्टक रहा था। कीचड़ ॥ सने हुए बरसाती जूते एक कोने ॥ उल्टे पड़े थे। उनम से पानी चू रहा था।

निकोलाय निकोलायविच न लिखाया - दूसरी ओर ज म-मृत्यु क आकड़े मानित करते है

--'विचाराधीन वष के अन्तगत। --यह भी जोड़ लीजिये --इवान इवानोविच ने कापी म नोट करते हुए कहा। थोड़ा दर तक निस्तब्धता छा गया। ग्रेनाइट के टुकड़े कागजों पर रख दिय गय, ताकि वे उड़ न जाय।

काम खत्म होते ही निकोलाय निकोलायविच जान क लिय तयार हो गय।

बोला -तूफान आनवाला है। चलना चाहिए।

-कोई बात नहा। म जान नहा दूगा। अब हम चाय पीयेंगे।

-लेकिन मुझे सन्ध्या से पहले शहर अवश्य पहुच आना चाहिए।

-बहस करना व्यथ है। म मानूगा हा नहीं।

तम्बाकू की मिली-जुली गध क साथ बगीचे म धूआ फैला हुआ था। चाय तैयार था। नौकरानी एक बड़ा सी ट्रे म मक्खन, कक और कुछ फल ल आई। मालूम हुआ कि पावेल घोड़ा क साथ नदी म स्नान करन गया हुआ है। निकोलाय निकोलायविच के पास सिवाय रुक जान क कोई उपाय नहीं था।

इवान इवानोविच न प्रस्ताव रखा -जब तक चाय तैयार हो रही है, चलो नदी तक घूम आव।

कोलेप्रिवाव की मित्रता के बल पर उसने मैनेजर के दो कमरों पर कब्जा जमा लिया था। बगाच के एक कोने म, छोटी सी बगिया में, उसके रहने का स्थान था। उसके पास से हो पुराना रास्ता गुजरता था। जहा पर काफी घास उग आई थी और जिसका सिवाय मैले की गाडिया खाली करने के, अब कोई उपयोग नहीं होता था। परिणाम स्वरूप नाली का कूड़ा-कचरा फकने का वह स्थान बन गया था।

लड्मायाने कोलोप्रिवोव के विचार काफी उदार थे। क्रांतिकारियों का वह पक्षपाती था। अपनी पत्नी के साथ इस समय वह कहीं बाहर-गाव गया हुआ था। कुछ नौकरों और अपनी दासियों के साथ उसकी लड़कियां, लीपा और नादिया, उसी मकान म रह रही थीं।

मनेजर के रहने के स्थान और नकली झाल तथा लान से सुशोभित इस मकान के बीच ब्लेक-हार्न की बाड़-सी लगी हुई थी। जैसे हो वे दोनों बाड़ के करीब पहुचे गोरैया का झुड फुर्ति से उड गया। ब्लेक-हार्न के काटे उन दोनों के शरीर पर चिपक गये थे और उनकी गपशप अगाध रूप से प्रवाहित थी।

पुराने भवन के पत्थरों के टीले, माली के रहने का स्थान और कोमल वनस्पतियों को गर्म रखने वाले शीशे के छोटे मकानों को वे पार कर गये। साहित्यिक महारथियों में प्रतिभाशाली लोगों की नई धारा के विषय में वे बात चीत कर रहे थे।

निकोलाय निकोलोविच ने कहा -प्रतिभाशाली लोग सुलभ हैं जरूर मगर अपवाद रूप मे। वे अपने म ही मस्त रहते हैं। क्लब और सोसाइटियां तो आजकल फैशन की तरह हर नगर म बन रही ह। वहा भी लोग एकदिन होते हैं उनमे उदासीनता के चिह्न ही दृष्टिगोचर होते हैं-चाहे सोलोव्यय के प्रति वफादार लोगों का समुदाय हो चाहे कान्त या मार्क्स के प्रति वफादार लोगो का दल। सत्यशोध तो सिर्फ व्यक्तिगत रूप से सभव है। और जिनका सत्य-शोध के प्रति इतना आग्रह नहीं है, उनसे इस तरह के प्रतिभाशाली व्यक्तिवादी लोग अलग-से हो जाते हैं। दरअसल समार म हैं ही कितनी चीजें-जिनके प्रति हम वफादार रह सकें? वास्तव में बहुत कम। चिर-मास्तत-यह उपमा ही जीवन के लिये अधिक साधक है--प्रत्येक को इसी पर विश्वास करना

चाहिए। प्रत्येक को ईसा-मसीह के प्रति सच्चा रहना चाहिए-अनश्वरता के प्रति इमानदार रहना चाहिए।

मेरे प्यारे भाइ, शायद तुम बुरा मान गये। मैंने जो कुछ कहा तुम उसमें से एक भी शब्द नहीं समझे।

-हु ? इवान इवानोविच ने प्रत्युत्तर में हुंकार भरी। इवान दुबला-पतला चंचल स्वभाव का युवक था। अपनी छोटी दाढ़ी और खूबसूरत बालों के कारण वह लिंकन के समय का अमेरिकन लगता था। अपनी दाढ़ी को सहलाने और उसकी नोक के साथ खेलते रहने की उसकी आदत थी। उसने कहा -वास्तव में मैं कुछ नहीं कहता। तुम्हें तो मालूम ही है कि इन बातों के प्रति मेरा दूसरा ही दृष्टिकोण है। और जब बात चल ही निकली है तो पूछता हू कि जिस दिन तुम्हें धर्मगुरु के पद से अलग कर दिया गया उस दिन तुम्हारे मन पर क्या बीती ? तुम्हें निश्चित रूप से दुख हुआ होगा-यह मैं शर्त लगा कर कह सकता हू। उन लोगों ने तुम्हारी काफी निन्दा की होगी ?

---तुम विषय बदलने की कोशिश कर रहे हो। फिर भी नहीं, इवान मुझ पर शाप नहीं बरसाये। आजकल किसी को शाप दिया नहीं जाता। कुछ कटु लगनेवाली बातें अवश्य हो गयी और परिणाम-जनित घटनाएं भी। उदाहरण के लिए मुझे कई वर्षों के लिए अधिकृत नौकरी से वंचित कर दिया गया है। मास्को और पीटर्सबर्ग में मेरा प्रवेश-निषिद्ध है। लेकिन ये सब छोटी बातें हैं। मैं कह रहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह के प्रति इमानदार रहना चाहिए। मैं इसे स्पष्ट रूप से समझाता हू। जिस बात को तुम नहीं समझ पा रहे हो-वह यह है कि नास्तिक होना सम्भव है। बहुत सरलता से तुम यह मान सकते हो कि ईश्वर का अस्तित्व है ही नहीं। और परमात्मा का अस्तित्व होना जरूरी भी क्या है ? फिर भी यह विश्वास तो करना ही होगा कि मनुष्य प्राकृतिक नियमानुगत नहीं रहता बल्कि वह ऐतिहासिक रचना है। इतिहास---और इतिहास वह है जो मसीह के जन्म से प्रारम्भ हुआ। मसीह-वाणी द्वारा यह प्रस्थापित हुआ। आखिर इतिहास क्या है ? मृत्यु की रहस्यात्मक पहेली के लिए शताब्दियों से चली आ रही मनुष्य की सतत चेष्टा ही तो इतिहास का प्रारम्भ है। इन सकल चेष्टाओं का लक्ष्य है मृत्यु पर विजय। इसीलिए लोग

मामगान लिखते हैं, इसीलिए वे गणित शास्त्र की असीमता का खोज करते हैं, इसीलिए विद्युत्चुम्बकीय लहरों का खोज करते हैं। इस दिशा में बिना आत्मा का प्रेरणा पाये अधिक प्रगति का नहा जा सकती। बिना आध्यात्मिक साधना के इस प्रकार का अन्वेषण-अनुसन्धान नहीं किया जा सकता। इसीलिए मसीह ने अपनी उपदेश-वाणी में प्रत्येक आवश्यक निर्देशन दिये हैं। और यह सब क्या है?-सच्ची बात है अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम—यह जीवित शक्ति का उच्चतम परिष्कृत स्वरूप है। मनुष्य के हृदय में यदि एक बार यह भावना समा सका तो अन्त तक वह अबाध गति से प्रवाहित होती रहेगी।

आधुनिक मनुष्य की रचना में दो विचारधाराएँ प्रमुख हैं, जिनके बिना उसका व्यक्तित्व अकल्पनीय है। मुक्त व्यक्तित्व तथा जीवन का धारणा को ही रोग माना जाता है। मजे का बात यह है कि यह सब अभी तक पूर्णतया नवीन विचारधारा है। मानविक सृष्टि में इस पद्धति का कोई इतिहास नहीं है। तुम्हें सर्वत्र मिलेगा मर्यादारहित रक्तपान, पाशविकता और क्रूरता का अमिट दाग। किसी भी रूप में जो मनुष्य को गुलाम बनाता है वह निश्चित रूप से निकृष्ट कोटि का व्यक्ति है। प्रस्तुत इतिहास में तुम्हें मिलेगी मद घमण्ड भरी असभ्यता का प्रतीक कामों का प्रतिमाएँ तथा संगमरमर के कीर्तिस्तम्भ! ईसा-मसीह के उद्भव से पहले आदमी स्वतन्त्रतापूर्वक सांस नहीं ले पाया था। इसके बाद ही आदमी नग्न रूप में, गड्ढों में कुत्तों का तरह मरने के बजाय घर में आदमी का तरह मरने लगा था। ईसा बाद ही वशमुष्टि हुई। अपने सर्वश्रेष्ठ कार्यकाल में मृत्यु जातन का मनन चेष्टा में मनुष्य ने अपने आपको समर्पित कर दिया। उफ्। मैं पसीने से तर हो गया हूँ। शायद मैं दीवार के सामने व्यर्थ सिर टकरा रहा हूँ?

--यह गहरा आत्मचिन्तन है भले आदमी। यह मुझे हजम नहीं होगा। डाक्टरों ने इसे निषिद्ध कर रखा है।

--और, अच्छी बात है। छोड़ो इसे। तुम बिलकुल बेकार के आदमी हो। कुछ भी भाग्यवान होते हैं। क्या यह कितना खूबसूरत दृश्य है? मेरा ख्याल है कि इन सबके निकटतम उपवन में रह कर भी तुमने इस सुन्दरता की ओर कभी नहीं देखा।

सूर्यकिरणों ■ नदी की जलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश मे आंख चौंधिया जाती थीं। नदी की लहरा म सल्वटें पडतीं, मुडाव आते और फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बडा नाव में घोड़, गाडियां, किसान और उनकी स्त्रियां उस पार जान के लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा —देखो इस समय पाच बज रहे हैं। रिजरान स आनेवाली एक्सप्रेस पांच बज कर पांच मिनट पर यहां से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुए नीले पीले रंग की गाड़ी दाहिनी ओर स आती हुइ बहुत ही छोटे आकार म दिखाइ दे रही थी। उन्होंने देखा कि एक्सप्रेस अचानक रुक गयी है। इजन के ऊपर से उड़नेवाले धूए के सफेद बादल दिखाइ दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से सावधान करनेवाली सीटी की आवाज सुनाइ दी।

वास्कोबोयनिकोव ने कहा —यह अद्भुत बात है।

—कुछ गडबड जरूर है। इस दलदल के बीच गाडा के इस प्रकार खड़े हो जान का कोइ साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुइ है।

—चलो, चल कर चाय पीय।

६

निकी न घर म मिला न बगीचे म ही। यूरा के मामा और इवान इवानो विच बाहर बराम्द में बठ काम कर रहे थे। निरुद्देश्य रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निकी उसे अपन समान नहीं मानता और मेहमानों से तग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह बहुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रग का अग्र पक्षी अपन सुरीले कठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाना, ताकि उसकी मधुर रसीली और स्वच्छ आवाज गांव क अणु रेणु म व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगन्ध अपन मूल-स्थान ढलान म अचल भाव से पड़ी थी। यूरा को इन सबने एंटिस और बोर्डिघेरा की याद दिला दी। वह इधर उधर घूमता रहा। सारे बगीचे म से उसे अपनी मा की आवाज का भ्रम कानों क समीप सुनाइ देन लगा। मधुमक्खियों की भिनभिनाहट म, चिड़ियों की संगीत

मय चहचहाहट में भी मां का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मां उसे चतुर्दिशाओं से पुकार रही है–उसे अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उस ओर से। मानो वह उसका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो। इस भ्रम से वह कांप सा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिरे से लटकती हुई झाड़ियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर चला। नीचे टूटी हुई शाखाओं के बचर में सीलन था अंधेरा था। सचित्र बाइबिल में चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले डण्ठलों की संख्या अधिक और पत्तों की तादाद कम थी।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक हतोत्साहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो देगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की –हे मेरे पवित्र संरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सत्य का मार्ग बता कर मां से कह दो कि मैं बिलकुल ठीक हूं। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु, उसे स्वर्ग में अंगीकार करना, जहां सन्तों का सुखद मंगल और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकाशित साधन न्याय सुलभ है। मेरी मां इतनी अच्छी थी कि वह पापात्मा हो हो नहीं सकती। उसे दया-दान दो, और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सन्ताप मत दो। मां––। ऋषियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानों उसने अपनी मां को धरती पर बुला लिया और अब वह इस विचित्र कष्टप्रद अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक देर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर देकर वह नाली से ऊपर चलने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोए हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना की ही नहीं, जैसा कि उसकी मां ने उसे सिखाया था।

थोड़ा देर का इस मूर्छा ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा –पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे थोड़ी

सूर्यकिरणों ■ नदी की चलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश से आग चौंधिया जाता थीं। नदी की लहरों में सलवटें पड़तीं, मुडाव आत और फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बड़ी नाव म घोड़े गाड़िया, किसान और उनकी स्त्रियाँ उस पार जाने के लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा —देखो इस समय पाच बज रहे हैं। खिजरान से आनेवाली एक्सप्रेस पाँच बज कर पाँच मिनट पर यहां से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुए नीले पीले रंग की गाड़ी दाहिनी ओर से आती हुई बहुत ही छोटे आकार म दिखाइ दे रही थी। उन्होंने देखा कि एक्सप्रेस अचानक रुक गयी है। इजन के ऊपर से उड़नेवाले धूए के सफेद बादल दिखाइ दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से सावधान करनेवाली सीटी की आवाज सुनाइ दी।

वास्कोनोयनिकोव ने कहा —यह अद्भुत बात है।

—कुछ गडबड जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ी के इस प्रकार खड़ हो जाने का कोइ साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुइ है।

—चलो, चल कर चाय पीयें।

६

निकी न घर में मिला न बगीचे में ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बरामदे में बैठे काम कर रहे थे। निरुद्देश्य रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निकी उसे अपने समान नहीं मानता और मेहमानों से तंग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह बहुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का अंश पक्षी अपने सुरीले कंठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता ताकि उसकी मधुर रसीली और स्पष्ट आवाज गोत्र के अणु रेणु म व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगंध अपने मूल-स्थान ढेलों म अचचल भाव से पड़ी थी। यूरा को इन सबने एटिस और बोडिघेरा की याद दिला दी। वह इधर उधर घूमता रहा। सारे बगीचे म से उसे अपनी मां की आवाज का भ्रम कानों के ... मधुमक्खियों की भिनभिनाहट म चिड़ियों की संगीत

मय चहचहाहट मे भी मा का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मा उसे चतुर्दिशाओं से पुकार रही है–उसे अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उस ओर से। मानो वह उसका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो। इस भ्रम से वह काप सा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिरे से लटकती हुई झाडियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर बढा। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचरे में सीलन थी, अन्धेरा था। अचित्र याइबिल स चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले डठलों की सख्या अधिक और फूलों की तादाद कम था।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक हतोत्साहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो देगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आखों से आसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की –हे मेरे पवित्र सरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सत्य का साक्षी बना कर मा मे कह दो कि मैं बिलकुल ठीक हू। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु, उसे स्वर्ग में अगीकार करना, जहां सन्तों का सुखद सत्सग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकाशित साधन न्याय सुलभ है। मेरी मां इतनी अच्छी था कि वह पापात्मा हो ही नहीं सकती। उसे दया-दान दो और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सताप मत दो। मा--! व्यथियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानों उसने अपना मा को धरती पर बुला लिया और जब वह इस विचित्र कष्टपूरित अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पडा।

अधिक देर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर देकर वह नाली मे ऊपर चढने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोये हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना का ही नहीं जैसा कि उसका मा न उसे सिखाया था।

थोडा दर का इस मूर्छा ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इस ताजगी को छोडना नहीं चाहता था। उसने सोचा –पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पडेगा। वे थोडी

सूर्यकिरणों म नदी की जलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश मे आखें चौंधिया जाती थीं। नदी की लहरों में सल्वटें पड़तीं, मुड़ाव आते और फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बड़ा नाव म घोड़े, गाड़ियां, किसान और उनकी स्त्रियां उस पार जाने क लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा —देखो इस समय पाच बज रहे हैं। खिजरान स आनेवाली एक्सप्रेस पांच बज कर पांच मिनट पर यहां से गुजरती है।

दूर मैदान स आती हुए नीले पीले रग की गाड़ा दाहिनी ओर स आती हुई बहुत ही छोटे आकार म दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि एक्सप्रेस अचानक रुक गयी है। इंजन के ऊपर से उड़नेवाले धूए के सफेद बादल दिखाई दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से सावधान करनेवाली सीटी की आवाज सुनाई दी।

वास्कोनोयमनिकोव ने कहा —यह अद्भुत बात है।

—कुछ गडबड जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ी के इस प्रकार खड़े हो जाने का कोई साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुई है।

—चलो चल कर चाय पीय।

६

निकी न घर म मिला न बगीचे म ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बराम्दे में बैठे काम कर रहे थे। निरुद्देश्य रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा न सोचा कि निकी उसे अपने समान नहीं मानता और मेहमानों से तंग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह वस्तुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का पक्षी अपने सुरीले कंठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता, ताकि उसकी मधुर, लचीली और स्पष्ट आवाज वायु के अणु रेणु म व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगन्ध अपने मूल-स्थान डंठलों में अचंचल भाव से पड़ी थी। यूरा को इन सबने एन्निस और वोडिघेरा की याद दिला दी। वह इधर उधर घूमता रहा। सारे बगीचे में से उसे अपनी मां की आवाज का भ्रम कानों के समीप सुनाई देने लगा। मधुमक्खियों की भिनभिनाहट में, चिड़ियों की संगीत

मय चहचहाहट में भी मां का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानों मां उसे चतुर्दिशाओं से पुकार रही है—उसे अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज आती, कभी उस ओर से। मानो वह उसका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो। इस भ्रम से वह कांप सा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिर से लटकती हुई झाड़ियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर बढ़ा। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचरे में सीलन था, अंधेरा था। पवित्र बाइबिल में चित्रित इजिप्शियन राजदण्ड की तरह गठीले डठलों की संख्या अधिक और फूलों की तादाद कम था।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक उत्तेजित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो देगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की —हे मेरे पवित्र संरक्षकों, हे देवदूतों मुझे सत्य का साथी बना कर मां से कह दो कि मैं बिलकुल ठीक हूं। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु उसे स्वर्ग में अंगीकार करना जहां सन्तों का सुखद सत्संग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह अकम्पित साधना न्याय सुलभ है। मेरी मां इतनी अच्छी थी कि वह पापात्मा हो ही नहीं सकती। उसे दया-दान दो और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सन्ताप मत दो। मां—!' ऋषियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानों उसने अपनी मां को धरती पर बुला लिया और जब वह इस विचित्र कष्टपूरित अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक देर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर देकर वह नाली से ऊपर चढ़ने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोये हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना की ही नहीं, जैसा कि उसकी मां ने उसे सिखाया था।

थोड़ा देर की इस मूर्छा ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा —पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे थोड़ी

देर रुक कर इन्तजार भी कर सकते हैं। यूरा ने सचमुच अपने पिता को कभी याद किया भी नहीं।

७

ओरनबर्ग के एक वकील का लड़का मिशा गोर्डन अपने पिता के साथ सकण्ड-क्लास के डिब्बे में सफर कर रहा था। नदी पार के मैदान में उनकी गाड़ी खड़ी हो गयी थी। गम्भीर चेहरे वाला मिशा ग्यारह साल का लड़का था। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं और उनमें गहराई थी। वह अपने स्कूल के द्वितीय वर्ग में था। उसके पिता ओसिपोविच गोर्डन का तबादला मास्को में एक नये पद पर हो गया था। मकान आदि की व्यवस्था करने के लिए-उसकी मां और बहिन पहले ही पहुंच गयी थीं।

मिशा और उसके पिताश्री तीन दिन से सफर कर रहे थे। सूर्य की गर्मी से चूने की तरह सफेद दिखाई देने वाले धूल भरे गमगलों से आच्छादित रूस के खेत, गांव कस्बे और धास भरे मकान उनके सामने से गुजर गये। रेल का लेवल-क्रॉसिंग के बाहर सड़क के किनारे गाड़ियों की कतारें लगी हुई थीं। भय कर तेजी के साथ आनेवाली गाड़ी के कारण कतारवाली ये गाड़ियां निश्चल रूप से खड़ी थीं और घोड़े मगरता से घड़ियां गिन रहे थे।

बड़े स्टेशनों पर मुसाफिर फुर्ती से डिब्बों से कूद कर बाहर निकल आते और खाने पीने के सामान की खोज में इधर उधर फैल जाते। अस्तगामी सूर्य की रश्मियों ने ज्योंहि स्टेशन के पिछले भाग में इशारा किया मुसाफिर भाग कर गाड़ी में बैठ गये और गाड़ी के पहिये चल दिये।

संसार की समस्त हलचलों पर यदि अलग-अलग रूप में विचार किया जाय तो वे कभी गंभीर और सुनिश्चित दिखाई देंगी। लेकिन यदि उसे अविभाज्य रूप से देखा जाय तो लगेगा कि जीवन प्रवाह का आवेग इस पीढ़ी को सबको अपने साथ एकत्रित करके बहाये लिये जा रहा है। लोगों ने काम और संघर्ष किया है-अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और चिंताओं के कारण! यद्यपि उन्हें इसके लिए बाध्य किया गया है-फिर भी कर्म की यह प्रेरणा पतनोन्मुख होकर कभी की समाप्त हो जाती यदि उन पर परम समग्रता की अनुभूति का निग्रह, सीमाहीन उदासीनता की कड़ी नजर, न होती। मानवीय जीवन के गुंथन और

ग्नके एक दूसरे म मिश्रित होन के सुगद आवागमन के कारण यह अनुभूति मा ‍‍‍‍रना बन कर मनुष्य म प्रस्थापित हुइ ।

मृयु लोक म जो कुछ घटित हो रहा है वह कहीं किसी दूसर स्तर पर भी घटित हो रहा है इस विश्वास को ही कुछ लोग इश्वरीय सत्ता के रूप में मानत हैं। कुछ लोग इसे इतिहास कहते हैं। कुछ लोग इसे किसी और नाम से पुकारते है।

मिशा अपन आपको इस साधारण नियम का दुर्भाग्यपूर्ण अपवाद समझता था। उसकी प्रगति और मुक्ति, ससार के साधारण लोगों की उदासीनता के बजाय अपनी ‍यग्रता के कारण ही हुइ था। ‍किन आत्म-चेतना का अपनी विरासत के बारे में उसे मालूम था। इससे वह दुखित भी था, विक्षुब्ध भी।

ठीक उसी तरह क हाथ-पाव वाला, एक हा भाषा बोलनेवाला और एक हा जीवन-पद्धति का प्रत्येक व्यक्ति कितने भिन्न रूपों में है—मिशा का आश्चर्य कभी समाप्त न हो पाता। एक आदमी ऐसा है कि जिसे कोइ पसन्द नहीं करता कोइ प्यार नहीं करता। क्या एक आदमी दूसरे का अपेक्षा पतित होने पर, उन्नति का चेष्टा नहीं कर सकता? फिर ज्यू होने का अथ हा क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? दुख का कारण बननेवाली इस मूक चुनौती का प्रतिफल क्या है और क्या है इसका साधकना।

जब कभी उस अपने पिता के साथ इन समस्याओं का चिक छेड़ देना तो उसे यहा जवाब मिलता कि ये सब व्यर्थ के प्रपच है और तुम्हारे सवाल बेतुके हैं। तुम्हें इस तरह का विचार नहीं करना चाहिए।' निश्चित रूप से घटित होने वाले भविष्य के प्रति मूक विनम्रता के लिए प्रेरित करनेवाला उसे कोइ समाधान प्राप्त नहीं होता।

जिनके कारण इस उलझन की सृष्टि हुइ थी, उन तमाम लोगों की नजरों में धीरे धीरे मिशा तिरस्कार का पात्र बन गया, सिवाय अपने माता-पिता की नजरों के। उसे निश्चित रूप से विश्वास हो गया कि जब वह बडा होगा तब वह इस सारी अव्यवस्था को ठीक कर देगा

उदाहरण के लिए, उसे कोइ यह नहीं समझा सकता कि नहाने के तालाब में स्प्रिंग-बोड से कूद पड़ने वाले व्यक्ति की तरह जब वह

उसके पिता को दूर हटा कर दरवाजा खोल कर, कोरीडोर से भागते हुए मर के बल चलती गाड़ी से कूद पड़ा, तो उसके पिता को गाड़ी रोकने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए थी।

काफी अर्से तक ट्रेन रुकी पड़ी रही। हकीकत यह थी कि ग्रिगोरी ओसिपोविच ने ही जंजीर खींच कर गाड़ी खड़ी कर दी थी। अन्य सहयात्रियों को लगता था कि इस तरह गाड़ी का रुकी रहना, और विक्षुब्ध कर देने वाली परिस्थिति इस गोर्डन-परिवार ने ही जानबूझ कर की है।

निश्चित रूप से कोई नहीं जानता था कि क्यों इतना समय लग रहा है कुछ लोगों का कहना था कि अचानक गाड़ी रोकने के कारण वायुसचालित ब्रेक खराब हो गये हैं। कुछ लोगों का मत था कि चूँकि गाड़ी ऊँची चढ़ाई पर रुकी है, इस लिए एंजिन बिना अधिक जोर लगाये गाड़ी खींच नहीं सकता। तीसरा विचार था कि आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के वकील ने, जो उसके साथ ही था आग्रह किया है कि समीपवर्ती थाने से अधिकारी बुला लिये जायें ताकि पंचनामा तैयार हो सके। सम्भवतः इसीलिए ड्राइवर का साथी तार के खम्भे पर चढ़ कर समाचार पहुंचाने की व्यवस्था कर रहा था। निरीक्षण ट्राली अधिकारियों को लिये आ ही रही होगी।

डिब्बे के पिशाबघर से लगभग यू डी कोलोन की गंध की तरह तेज दुर्गन्ध आ रही थी। गन्दे तेल के धब्बों वाले कागज में लिपटे हुए तले हुए मुर्ग शावकों की गन्ध भी वातावरण में फैल रही थी। कर्कश आवाज वाली और हवा के कारण धूल-धूसरित पीटर्सबर्ग की स्त्रियाँ कालिमा और उबटन के संयोग से जिप्सियों के रूप में परिणित हो गयी थीं। वे अपने चेहरे पर पाउडर पोतने में और अंगुलियों को रूमाल से पोंछने में इस तरह व्यस्त थीं कि मानो कहीं कुछ हुआ ही न हो। हावभाव से मटकती हुई जब वे अपने कंधे हिलाने की चेष्टा करतीं तो छोटा सा डिब्बा उनसे मानो माफी मांगने लगता। वे गोर्डन के डिब्बे की ओर बढ़ीं।

मिशा को लगा कि उन स्त्रियों के सिकुड़े हुए होंठों में से मंद फुसफुसाहट आसपास के पौधों के बारे में चर्चा कर रही है कि हे भगवान, ये पौधे कितने नाजुक हैं। शायद ये पौधे सोच रहे होंगे कि उनकी सृष्टि विशेष रूप से की गई है। सच ये सब चतुर हैं। यह सब इनके प्रति बड़ी भारी

आत्महत्या करने वाले व्यक्ति का शव नदी के किनारे घास पर पड़ा था। उसके माथे पर रक्त के काले दाग उभर आए थे। रक्त की जमी हुई धाराएं उसके सारे चेहरे पर फैली हुई थीं। रक्त सूख कर जम गया था। लगता था कि यह उस आदमी का खून नहीं है बल्कि भिन्न किस्म की कोई चीज है। जैसे मुलम्मे के टुकड़े अथवा मिट्टी की रेखाएं या जम कर उभरे पत्ते।

बहुत सारे सहानुभूति दर्शाने वाले लोगों का झुण्ड शव को घेरे हुए था। मृतक के पास उद्विग्न और विचारशून्य दृष्टि से देखते हुए उसका वकील और हमसफर पालतू जानवर की तरह खड़ा था। वह पशमीने की कमान पहने हुए था। हट्टे कट्टे बलिष्ट देह वाले उस व्यक्ति का चेहरा अभिमान से आप्लावित था। वह गर्मी से भाग जा रहा था और अपने हैट से हवा करने में व्यस्त था। किसी भी प्रश्न के उत्तर में थान काढ़ कर वह कंधे हिलाते हुए कहता —वह शराबी था। इससे अधिक उससे उम्मीद का भी क्या जा सकती थी?

एकआध बार एक दुबली पतली वृद्धा पास से गुजर गयी। वह ऊनी कपड़े पहने हुई था और उसके हाथ में लैस का रुमाल था। वह थी विधवा तिविरजिना। उसके दो लड़के एंजिन ड्राइवर थे। वह इसी गाड़ी से अपनी दोनों बहुओं के साथ निःशुल्क-आदेश-पत्र लिये तीसरे दर्जे में यात्रा कर रही। श्री तिनिरजिना के पीछे दो स्त्रियां चुपचाप इस तरह चल रही थीं जैसे धार्मिक-भिक्षुणियां अपनी धर्म-दीक्षित श्रेष्ठ माताओं के साथ चल रही हों। भीड़ ने उनके लिए रास्ता दे दिया। तिविरजिना का पति एक रेल-दुर्घटना में जीवित जल कर मर गया था। वह शव से कुछ दूर खड़ी हो गयी जहां भीड़ में से वह उसे देख सकती थी। उसने दीर्घ-श्वास ली मानों वह दो दुर्घटनाओं की तुलना कर रही हो। जैसे कह रही हो —प्रत्येक अपने भाग्यानुसार! कोई प्रभु की इच्छानुसार मृत्यु प्राप्त करता है और यह है दिल पर पत्थर सा भार रख देनेवाली घटना, कि कोई अपने ऐश्वर्यसम्पन्न जिन्दगी में मतिभ्रम के कारण स्वयं मर जाय।

लगभग सभी यात्री डिब्बे से बाहर निकल आये थे। शव को एक नजर देखने के बाद वे अपने-अपने डिब्बों में लौट गये। उन्हें डर था कि कहीं उनका सामान चोरी न चला जाय। स्टेशन पर कूदने पर कुछ लोग आसपास के फूल तोड़ने लगे और कुछ बैठे-बैठे तंग आकर हाथ-पांव फैलाने के इरादे से

इधर उधर टहलने लगे। उन सबको ऐसा लग रहा था कि यह सारा वातावरण इस तरह गाड़ी रोक देने के कारण ही उपस्थित हो गया है। यदि यहां गाड़ी खड़ी न कर दी गयी होती तो न यह दबा हुआ दल्दल होना और न यह चौड़ी नदी। इस दुर्घटना के बिना न ये आस-पास के सुन्दर मकान होते और न दूसरे किनारे पर चर्च ही।

जिस तरह समीप में ही चर रहे किसी झुंड में से एक गाय ने आकर इस भीड़ की ओर एक नजर देखा उसी तरह मध्याकालीन सूर्य रश्मियों का प्रकाश भी इस मृतक के शव पर उदासीन भाव से पड़ रहा था। शुद्ध रूप से यह एक स्थानीय स्पष्ट घोषणा थी, और घटनास्थल इस नाटकीय मंच का एक विशिष्ट भाग।

इस दुर्घटना से मिशा गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ था। दुख और अफसोस के मारे एक बारगी वह चीख सा उठा। मृतक व्यक्ति इस लम्बी यात्रा के दौरान में अनेक बार उसके पास उसके डिब्बे में आया था। वह घण्टों उसके पिता के साथ बातचीत करता रहा। वह कह रहा था कि शांति अनुमोदन और चारित्रिक-शुद्धता की बातों से उसे बड़ा परित्राण मिलता है। वह यह भी कहता था कि इन सबको वह अपने आप में खोजता रहा है। उसने उसके पिता से कई महत्वपूर्ण बातों के बारे में अंतहीन सवाल पूछे थे। जैसे एक्सचेंज के बिल समझौते की कार्यवाही दिवालियेपन और षडयन्त्र सम्बन्धी कानून की मुख्य बातें। अंत में उसने कहा था —खैर, मैं कभी यह न जान सका कि कानून इतना दयापूर्ण और विस्तृत है। मेरे वकील की तो इस बारे में बहुत बुरी धारणाएं हैं।

जब इस आदमी का बोलने का उत्साह समाप्त हो जाता, तब पहले दर्जे से उसका हमसफर वकील उसे लेने चला आता और एक तरह से जबर्दस्ती खींचकर उसे रेस्ट्रां कार में ले जाकर उसके लिए शराब की व्यवस्था कर देता।

यह हमसफर वही व्यक्ति था जो इस समय शव के पास लापरवाही के साथ खड़ा था, जैसे इस सारी दुर्घटना में उसे कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लग रहा हो। यह बात सही थी कि उसके मुवक्किल का अथक-संघर्ष कुल मिलाकर उसके लिए लाभदायक ही सिद्ध हुआ।

मिशा के पिता ने उसे बताया कि आत्महत्या करनेवाला व्यक्ति सुप्रसिद्ध लक्ष्मीपति जिवागो था। स्वभाव उसका अच्छा था फिर भी था वह दुराचारी ही। उसका आधा दिमाग खराब हो चुका था।

मिशा की उपस्थिति की परवाह न करते हुए वह व्यक्ति अपनी स्वर्गीय पत्नी और मीशा की उम्र के अपने लड़के के बारे में बातें कर रहा था जिसे कि उसने छोड़ दिया था। इस बारे में बातचीत करते करते वह रुकता, कुछ देर तक सोचता रहता। फिर भय से पीला पड़ जाता और थोड़ा देर बाद गुनगुनाने लगता और अपनी कथा का सिलसिला भूल जाता।

मिशा के प्रति उसने बहुत प्रेम जाहिर किया था। सम्भवतः इस प्रेम के माध्यम से वह किसी और के प्रति अपने मन का स्नेह व्यक्त कर रहा था। बड़ी स्टेशनों के बुक-स्टालों पर जहां कहीं खिलौने अथवा बच्चों को पसन्द आनेवाली चीजें मिलतीं, वह कूद पड़ता, खरीद लाता और मिशा को इन उपहारों से लाद देता।

उसने बहुत ज्यादा शराब पी थी। तीन महीनों से वह सो नहीं पाया था। वह शिकायत भरे लहजे में कहता, जब कभी वह संयम रखने का चेष्टा करता है तो उसे इतनी यन्त्रणा भुगतनी पड़ती, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती।

अंतिम समय में वह तेजी के साथ उनके डिब्बे में आया, उसने गोर्डन का हाथ पकड़ लिया। वह उससे कुछ कहना चाहता था। लेकिन वह कह नहीं पाया। इसके बाद वह तेजी के साथ कोरिडोर की ओर लपका और गाड़ी के नीचे कूद पड़ा।

मृतक व्यक्ति की अंतिम भेंट यूराल के खनिज पदार्थों की छोटी सी डब्बी को खोल कर मिशा देखने बैठ गया। अचानक एक हलचल-सी मच गयी। एक डाक्टर दो पुलिस और एक मेजिस्ट्रेट को लिये एक ट्राली समानान्तर पटरी पर दौड़ती हुई आकर रुक गयी। वे सब लोग फुर्ति से कूद पड़े। साधारण रूप से औपचारिक प्रश्न पूछे गये और उनका बयान लिख लिया गया। बाद में फिसलते-हटकते पुलिस के सिपाहियों के साथ गार्ड ने मिल कर शव को खींच निकाला। एक ग्रामीण किसान स्त्री रो पड़ी। मुसाफिरों को अपने-अपने स्थान पर जाने का आदेश मिला। गार्ड ने सीटी बजाई और रेलगाड़ी चल पड़ी।

८

चारों ओर देखते हुए कमरे से निकल भागने का उपाय ढूंढ़ते हुए निका ने गुस्से में सोचा—यह है पवित्रतम संयोग!' चूंकि दरवाजे के बाहर से मेहमानों की आवाज आ रही थी इसलिए मुक्ति की कोई राह नहीं थी। एक उसका अपना और दूसरा बोरनोगोयनिकोव का—ये दो पलंग इस कमरे में थे। थोड़ी देर तक सोचते रहने के बाद वह रेंगता हुआ पलंग के नीचे जाकर छिप गया। बाहर लोग उसे पुकार रहे थे। उनकी आवाज सुनाई दे रही थी। सब लोगों को उसके इस तरह गायब हो जाने पर आश्चर्य हो रहा था और अब अंत में वे उसे खोजते हुए इस मकान के कमरे की ओर आ रहे थे।

—खैर कोई उपाय नहीं—निकोलाय निकोलायावच ने यूरा से कहा—चले आओ। तुम्हारा मित्र शायद थोड़ी देर बाद लौट आय। इसके बाद तुम उसके साथ खेल सकोगे।

वे पीनकक्ष में छात्रों के असंतोष की चर्चा करने बैठ गये। तभी ही कष्टपूर्ण अवस्था में और भद्दे तरीके से निकी पलंग के नीचे छिपा पड़ा रहा। आखिर जब वे बरामदे की ओर चले गये तो निकी अपने गुप्त स्थान से निकला उसने धीरे से खिड़की खोली और बाहर कूद कर पार्क में चला गया।

कल वह रात भर नहीं सो सका था, इसलिए इस समय वह अलसाया हुआ और बेचैनी महसूस कर रहा था। वह चौदह वर्ष का हो चुका था और उसे बच्चा कहे जाने पर सख्त एतराज था। वह इस विशेषण से तंग आ गया था। रात भर जागने के बाद जब वह पार्क में चला गया उस समय सूर्य पेड़ों के कंधों पर रोशनी डाल रहा था और उनके कंधों की सुदीर्घ ओसभरी परछाईं जमीन पर पड़ रही थी। ये परछाइयां बिल्कुल काली नहीं थीं बल्कि भूरे रंग के भीगे कम्बल की तरह दिखाई दे रही थीं। ये तरल परछाइयां भूमि पर किसी कन्या की पतली उंगलियों की तरह प्रकाश की लकीरें खींच रही थीं। प्रातः काल की मदभरी समीर चलने ही वाली थी। निका के कदमों से थोड़ी दूर पर कुछ चमकीला रुपहला घास पर चमकनेवाला ओस की तरह प्रकाशित हो उठी। निरन्तर प्रवाहित होनेवाला वह प्रकाश पृथिवी में समा नहीं पाया था। तब मानो अनपेक्षित, तीव्र-क्रियाशीलता के कारण वह एक ओर से निकल कर फैल गया। दरअसल टुकड़ा में रहनेवाला वह एक सांप था। निकी कांप उठा।